विद्याभवन बालिका विद्यापीठ लखीसराय

कक्षा – षष्ठ **दिनांक -१२ -०५ - २०२१**

विषय -हिन्दी **विषय शिक्षक -पंकज कुमार**

एन, सी, ई, आरटी, पर आधारित

सुप्रभात बच्चों आज महादेवी वर्मा जी के जीवन परिचय के बारे में अध्ययन करेंगे ।

महादेवी वर्मा का जन्म 26 मार्च 1907 को उत्तर प्रदेश के फर्रूखाबाद जिले में हूआ था। महादेवी वर्मा के पिता के नाम श्री गोंविद प्रसाद वर्मा था तथा माता का नाम हेमरानी देवी था। अपने परिवार में सात पीढ़ियो के बाद कन्या का जन्म हूआ जिस कारण इनके बाब बाबू बांके बिहारी ने इन्हें घर की देवी— महादेवी मानते हूये इनका नाम महादेवी रख दिया।

महादेवी वर्मा की शिक्षा

महोदवी वर्मा की प्रारम्भ शिक्षा इंदोर के मिशन स्कूल से हूई। महादेवी वर्मा को संस्कृत, अंग्रेजी संगीत तथा चित्रकला की शिक्षा घर पर ही अध्यापकों द्वारा दी जाती रही। कम उम्र में विवाह हो जाने के बाद कुछ सालों तक उनकी शिक्षा स्थगित रही। इसके बाद 1919 में महादेवी वर्मा ने क्रास्थवेट कॉलेज इलाहाबाद में एडमिशन लिया और हॉस्टल में रहने लगीं। 1921 में महादेवी वर्मा ने कक्षा 8 की बोर्ड परीक्षा में प्रांत में पहला स्थान प्राप्त किया।

आठवीं के बाद से ही महादेवी वर्मा ने काव्य जीवन की शुरूआत की। 1925 में जब महादेवी वर्मा ने मैट्रिक की परीक्षा पास की। तब तक वे एक सफल कवयित्री के रूप में प्रसिध्द हो चुकी थीं। उनकी कविताऐं पत्र—पत्रिकाओं में प्रकाशित होने लगी थीं। 1932 में महादेवी वर्मा ने इलाहाबाद विश्वविद्यालय से संस्कृत में एम.ए. की परीक्षा उत्तीर्ण की। तब तक उनके दो कविता संग्रह नीहार और रश्मि प्रकाशित हो चुके थे। कॉलेज के समय मे ही महादेवी वर्मा की मित्रता **सुभद्रा कुमारी चौहान**से हुई।

जीवन

महादेवी वर्मा का विवाह 9 वर्ष की आयु में ही 1916 में बरेली के श्री स्वरूप नारायण वर्मा के साथ कर दिया गया। वर्मा उस समय 10 वीं के छात्र थे। इंटरमीडियेट पास करने के बाद वे लखनऊ मेडिकल कॉलेज के बोर्डिंग हाउस में

रहने लगे। जिसके बाद महादेवी वर्मा भी इलाहाबाद के क्रास्थवेट कॉलेज में पढ़ने चली गई। महादेवी वर्मा वैवाहि जीवन से विरक्त थी। उनके संबध सामान्य स्त्री—पुरूष के रूप में मधुर ही रहे। दोनों में कभी कभी पत्राचार होता था और कभी उनके पति उनसे मिलने इलाहाबाद आते थे।

श्री नारायण स्वरूप वर्मा ने महादेवी के कहने पर भी कभी दूसरी शादी नही। महादेवी वर्मा अपना जीवन संयासिनी की तरह व्यतीत करती थी। उन्होने जीवन भर सफेद कपड़े पहने और कभी शीशा नही देखा। 1966 में उनके पति की मृत्यु हो गई जिसके बाद महादेवी वर्मा स्थाई रूप से इलाहाबाद मे ही बस गईं।